



## 2

## जनसंचार

एआइआर एफएम गोल्ड, एआइआर एफएम रेनबो, रेडियो मिर्ची, दूरदर्शन, स्टार, जी, डिशनेट, टाटा स्काई..... एक अन्तहीन सूची। ब्रेकिंग न्यूज, फ्लैश, स्टिंग ऑपरेशन, लाइव कवरेज क्रिकेट की ..... जनसंचार के क्षेत्र में या कहीं भी जन माध्यम में अब हमारे संचार के तौर-तरीके में बदलाव आ गया है। हम मनोरंजन, संगीत, रियलिटी शो, धारावाहिक, ब्यूटी परेड और फैशन न्यूज इन सबका आनन्द लेते हैं। समाचारपत्र और पत्रिकाओं से अब फिल्म, टेलीविजन और इंटरनेट की ओर चले गये हैं। ये सब जन माध्यम के अलग-अलग रूप हैं और यह सब राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक विशाल अपरिचित श्रोता को संदेश संप्रेषित करते हैं।

इस पाठ में, आप जनसंचार का अर्थ समझेंगे तथा जन माध्यमों के विभिन्न प्रकारों के बीच का अन्तर जान सकेंगे।



## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित कर सकेंगे:

- जनसंचार की परिभाषा;
- जनसंचार के कार्यों की व्याख्या;
- जनसंचार के उद्भव का वर्णन;
- जन माध्यमों के विभिन्न रूपों के बीच अंतर;
- परम्परागत माध्यमों के अर्थ का वर्णन।

## 2.1 जनसंचार का अर्थ

जनसंचार की सरलतम परिभाषा है, “मशीनी या इलेक्ट्रॉनिक रूप से संचारित लोक संचार”। इसके प्रकार से संदेश का संचार बड़ी संख्या में लाखों-करोड़ों लोगों तक

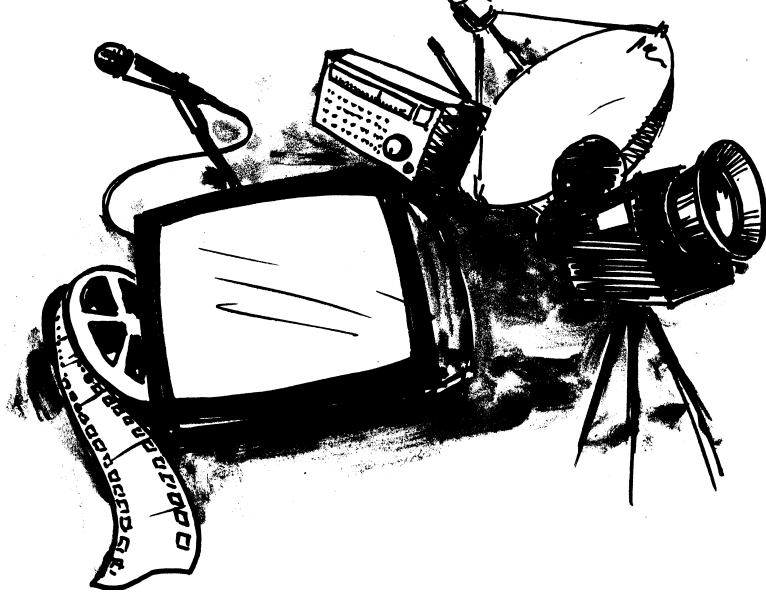


टिप्पणी

दुनिया भर में होता है।

यह संदेश किस प्रकार भेजे जाते हैं?

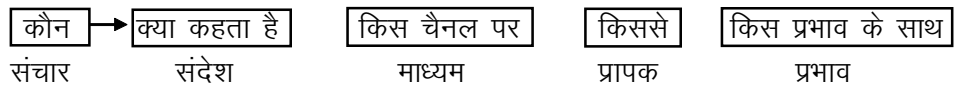
यह जन माध्यम के अनेक प्रकारों जैसे समाचारपत्र, पत्रिका, फिल्म, रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट के माध्यम से भेजे जाते हैं। मीडिया, मीडियम शब्द या 'संचार के माध्यम' का बहुवचन है।



चित्र 2.1: जनमाध्यम के विभिन्न रूप

संचार के माध्यम को संचार का "चैनल" भी कहते हैं। अतः जन माध्यम को "कौन", "क्या कहता है", "किस चैनल पर", "किस प्रभाव के साथ" के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है।

निम्न चित्र देखिए:



चित्र 2.2

"कौन" का सम्बन्ध संप्रेषक से है।

"क्या कहता है" यहाँ "क्या" का अर्थ है संदेश, "क्या वही है जो संदेश संप्रेषक ने लिखा, बोला, या दिखलाया है।

"किस चैनल पर" इसका अर्थ है माध्यम या चैनल जैसे समाचारपत्र, रेडियो या टेलीविजन।



“किससे” का अर्थ है संदेश को प्राप्त करने वाला व्यक्ति या.....

“किस प्रभाव के साथ” इसका अर्थ है कि एक मीडियम या चैनल पर संदेश का प्रभाव। अब हम विचार करें कि आपको एक घटना की सूचना समाचारपत्र से मिलती है या एक सामाजिक संदेश रेडियो पर सुनते हैं। यदि इससे दहेज जैसी सामाजिक बुराई के सम्बन्ध में आपका दृष्टिकोण बदल जाता है या टेलीविजन पर दिखाया गया एक फिल्मी गीत आपका मनोरंजन करता है तो इसे आप “प्रभाव” कह सकते हैं।

वे लोग जो फिल्में बनाते हैं, समाचार लिखते हैं, रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रमों का निर्माण करते हैं या विज्ञापन बनाते हैं, सभी संप्रेषक हैं, जिनके पास आपके लिये एक संदेश है। वे माध्यम जिनके द्वारा संदेश संप्रेषित किये जाते हैं जैसे समाचारपत्र, रेडियो या टेलीविजन, उन्हें “चैनल” कहते हैं। इसके बाद हम जनसंचार के कार्य पर चर्चा करेंगे।

## 2.2 जनसंचार के कार्य

समाचार और परिचर्चाएँ आपको सूचित करते हैं, रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रम आपको शिक्षित कर सकते हैं, फिल्में तथा टेलीविजन धारावाहिक तथा कार्यक्रम आपका मनोरंजन करते हैं।

सूचना शिक्षा तथा मनोरंजन – जन माध्यमों के यही कार्य हैं।

आइए अब हम जन माध्यमों के कार्य के विषय में कुछ और जानें।

वे लोग जो लिखते हैं, कार्यक्रमों का निर्देशन या निर्माण करते हैं, ऐसे लोग हैं जो हमें एक संदेश देते हैं। आइए हम रेडियो या टेलीविजन की एक समाचार बुलेटिन या समाचारपत्र के एक समाचार पर विचार करें। ये सब हमें किसी घटना की सूचना देते हैं। “नये राष्ट्रपति चुने गये”, “देश ने एक नया मिसाइल विकसित कर लिया”, “क्रिकेट में भारत ने पाकिस्तान को पराजित किया, “बम विस्फोट में 25 मरे”,। यह सभी हमें एक सूचना देते हैं। ये सब समुचित रूप से प्रारूपित और लिखित संदेश हैं जो उन लोगों द्वारा दिये जाते हैं जिन्हें संप्रेषक कहते हैं।

एक डॉक्टर किसी रोग की रोकथाम के बारे में टेलीविजन या रेडियो पर बोलता है या समाचारपत्र में लिखता है। विशेषज्ञ रेडियो या टेलीविजन पर कृषकों को एक नयी फसल, बीज या खेती के तरीकों के विषय में बताते हैं। इस प्रकार कृषक शिक्षित होते हैं। सभी व्यावसायिक सिनेमा, टेलीविजन धारावाहिक तथा संगीत कार्यक्रम मनोरंजन करते हैं।

“चैनल” वह माध्यम हैं जिनके द्वारा संदेश प्रेषित किया जाता है। ये समाचारपत्र, फिल्में, रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट हो सकते हैं।

पाठक, श्रोता तथा दर्शक पर जन माध्यमों का गहरा असर पड़ता है। इसी को प्रभाव कहते हैं। लोग टेलीविजन पर एक विज्ञापन देखते हैं और वह उत्पाद खरीद लेते हैं।



टिप्पणी

विज्ञापन से वे उत्पाद खरीदने के लिए प्रेरित होते हैं और इससे उनकी इच्छा को संतुष्टि प्राप्त होती है।

जब भारत स्वतंत्र हुआ तो यहाँ कृषि विकसित नहीं थी। हमारे देश में इतना गेहूँ या चावल पैदा नहीं होता था कि हमारे देशवासियों का पेट भर सके। तब हम अनाज का आयात करते थे, साठ ही देश की आबादी तेजी से बढ़ती जा रही थी। इस तरह बहुत सारे लोग भूखे रह जाते थे। अतः सरकार ने इस स्थिति में बदलाव लाने के लिए जन माध्यमों, विशेषतः रेडियो का उपयोग शुरू किया। अधिकांश अनपढ़ कृषकों को रेडियो के माध्यम से सही बीज, उर्वरक तथा खेती की नयी तकनीकी अपनाने के लिए कहा गया। इसका प्रभाव उल्लेखनीय रहा। इस तरह कृषि के क्षेत्र में एक क्रांति आ गयी जिसे हरित क्रांति कहा गया। इसी तरह जन माध्यमों ने छोटा परिवार बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। बहुत से लोगों ने छोटा परिवार मानक का अनुकरण किया और केवल दो या तीन बच्चों को जन्म दिया।

उदाहरण के लिए पल्स पोलियो अभियान को ले सकते हैं। पोलियो उन्मूलन के लिए जन माध्यमों ने लोगों को पोलियो की ड्रॉप के बारे में सूचित तथा शिक्षित किया। रचनात्मकता के साथ संदेशों को सृजन किया गया और फिल्मी सितारों ने ये संदेश लोगों को दिया। आपने अमिताभ बच्चन को टेलीविजन पर यह कहते देखा होगा, “दो बूँद जिंदगी की”।

## 2.3 जनसंचार का उद्भव

‘जनसंचार’ शब्द का विकास बीसवीं शताब्दी में हुआ। सदैव से मानव ऐसा साधन खोज रहा था जिससे एक संदेश तीव्र गति से बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचाया जा सके। एक समय था जब युद्ध जैसे समाचारों के संचार के लिए लोग दूर-दूर तक घोड़े की सवारी करते थे। संदेश पहुँचाने के लिए कबूतर का उपयोग डाकिए की तरह किया जाता था। आपने संस्कृत के महान कवि कालिदास के बारे में सुना होगा। उनके महाकाव्य ‘मेघदूत’ में यक्ष (स्वर्ग का गायक) बादलों के माध्यम से अपनी प्रेमिका को संदेश भेजता है। कागज तथा मुद्रण का आविष्कार, कालान्तर में समाचारपत्र का प्रकाशन जनसंचार के विकास का पहला चरण था। परन्तु 1835 में सैम्युअल एफ.बी. मोर्स द्वारा खोजा गया टेलीग्राफ ही था जिसके माध्यम से कूट संदेश का प्रयोग कर के संदेश को लम्बी दूरी तक भेजा गया। अगला कदम था मानवीय आवाज के रूप में संदेश प्रेषित करना। वर्ष 1876 में अलेक्जेंडर ग्राहम बेल लम्बी दूरी तक तार का प्रयोग करके मानवीय आवाज का संचार करने में सफल हुए। इसके बाद 1901 में मारकोनी ने रेडियो का आविष्कार किया जिससे बिना तार के लम्बी दूरी तक मानवीय आवाज भेजा जाना संभव हुआ। कालान्तर में 1947 में ट्रांजिस्टर की खोज होने से रेडियो ध्वनि संदेश भेजने के लिए और अधिक लोकप्रिय माध्यम बन गया। आज टेलीविजन ध्वनि और चित्र दोनों संदेश भेज सकता है, सर्वसुलभ बन गया है। वर्ष 1920 में बेयर्ड ने इसका आविष्कार किया।



टिप्पणी

## जन माध्यम

|            |
|------------|
| समाचारपत्र |
| पत्रिका    |
| विज्ञापन   |
| फिल्म      |
| रेडियो     |
| टेलीविजन   |
| इंटरनेट    |

चित्र 2.3

आप सोचते होंगे कि वास्तव में जनसंचार तथा जन माध्यम के बीच क्या अन्तर है। उसी क्षण जब कोई 'जन माध्यम शब्द' का प्रयोग करता है आपके मस्तिष्क में टेलीविजन ही आता होगा क्योंकि यही आज का सर्वाधिक लोकप्रिय जन माध्यम है। जब हमने जनसंचार की चर्चा की थी तो हमने "चैनल" या "मीडियम" शब्द का प्रयोग किया था, जैसा कि आप जानते हैं कि "मीडिया" "मीडियम" का बहुवचन है। एक मीडियम (माध्यम) संदेश भेजने का एक साधन मात्र है। जब हम किसी से मिलते हैं और बातचीत करते हैं तो यह आमने-सामने का संचार होता है। लेकिन जब हम जन माध्यम के विषय में बात करते हैं जैसे टेलीविजन तो यह आमने-सामने का संचार नहीं होता। इसमें 'जन' या विशाल संख्या में दर्शक शामिल होते हैं।

बड़ी संख्या में लोगों तक संचार करने का पहला माध्यम समाचारपत्र था। इसके बाद वास्तविक जन माध्यम, मारकोनी द्वारा आविष्कृत रेडियो आया। समाचारपत्र में समय के स्तर पर अपनी सीमाएँ हैं। समाचार को एकत्र करना, संकलित करना, फिर अग्रिम रूप से सम्पादित तथा मुद्रित करना और पढ़ने के लिए लोगों तक भेजना – इन सब गतिविधियों में बहुत समय लगता है। उदाहरण के लिए, जो कुछ भी आप प्रातःकालीन समाचारपत्र में पढ़ते हैं, उसे अर्द्धरात्रि में मुद्रित किया जाता है। इसका अर्थ है कि उस समाचारपत्र में अर्द्धरात्रि के बाद की घटनाओं का जिक्र नहीं होता। जाहिर है समाचारपत्र पाठक के लिए साक्षर होना आवश्यक है। आगे आने वालों पाठों में आप जनसंचार के विभिन्न अन्य रूपों की जानकारी प्राप्त करेंगे।



## पाठगत प्रश्न 2.1

1. जन माध्यम के कम से कम पाँच प्रकारों की सूची बनाएँ।
2. जन माध्यम का कोई एक कार्य उदाहरण सहित बताइए।



टिप्पणी

## 2.4 कागज

आपने पढ़ा है कि कागज का अन्वेषण संचार के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी घटना थी। कागज के अन्वेषण से पूर्व चट्टानों, चमड़े, ताड़पत्र आदि पर लिखा जाता था। आपने चट्टानों पर कुछ प्राचीन लेखन देखे होंगे जैसे अशोक के स्तूप या ताड़पत्र पर संस्कृत या अन्य भारतीय भाषा के अभिलेख। यद्यपि 105 ईस्वी में एक प्रकार के कागज के प्रथम प्रयोग का श्रेय चीनियों को जाता है। कागज (पेपर) शब्द एक पौधे पैपाइरस से लिया गया है जो मिस्र में नील नदी के तट पर उगता है।

आज हमारे लिए विभिन्न रूपरंग के कागज न आश्चर्य की वस्तु हैं न ही दुर्लभ हैं। क्या आप बिना कागज के दुनिया की कल्पना कर सकते हैं? आपका लगभग सारा पठन-पाठन कागज पर ही निर्भर है। आपकी पाठ्यपुस्तकें, नोट बुक्स, कॉपी, परीक्षा प्रश्न पत्र, अलग-अलग फॉर्म जो आप शिक्षा संस्थान में दाखिले के लिए भरते हैं, वह उत्तर पुस्तिका जिसमें आप अपनी परीक्षा के समय लिखते हैं, सभी कागज के ही बने होते हैं। क्या आप समाचारपत्र, पत्रिकाओं, और दीवार पर चिपकाए जाने वाले पोस्टर के बिना भी दुनिया की कल्पना कर सकते हैं?

## 2.5 मुद्रण

ऐसा माना जाता है कि जोहानस गुटेनबर्ग ने सर्वप्रथम 1439 के लगभग मुद्रण का विकास किया था। मुद्रण के साथ ही संचार के विकास की विधियों में क्रांति आ गयी। ज्ञान और सूचनाएँ जो तब तक समाज के उच्चवर्ग के एक भाग का एकाधिकार थे, शनैः शनैः साधारण लोगों के लिए भी उपलब्ध हो गये। दो कठोर आवरण के बीच मुद्रित सामग्री ने ज्ञान का विस्तार तीव्र कर दिया। विद्यालयों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में पुस्तकें उन लोगों के लिए उपलब्ध रहने लगीं जो उन्हें खरीद नहीं सकते थे फिर भी उन्हें पढ़ना चाहते थे। कालान्तर में समाचारपत्र तथा जर्नल भी लोकप्रिय हो गये।



चित्र 2.4: मुद्रित माध्यम

जिस मुद्रण प्रक्रिया का विकास गुटेनबर्ग ने किया था वह बाद में और अधिक परिवर्तित तथा यंत्र पर निर्भर बनी। आज मुद्रण अत्यधिक परिष्कृत हो गया है और मुद्रित माध्यम यथा समाचारपत्र, साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाएँ अपने आधुनिक मुद्रण प्रेस का उपयोग करते हैं, जो अत्यधिक तीव्र गति से छपाई करने में सक्षम हैं। कम्प्यूटर की वजह से मुद्रण प्रक्रिया और भी सुधर गयी है। आप 'मुद्रण माध्यम' के बारे में अगले पाठ में मुद्रण के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

**क्रियाकलाप 2.1**

अपने घर के पास एक छोटे मुद्रण प्रेस में जाइए, फिर एक समाचारपत्र की मुद्रण प्रक्रिया देखिए। आप समझ सकेंगे कि मुद्रण कैसे होता है।

**पाठगत प्रश्न 2.2**

1. निम्नलिखित का मिलान करें:—

- |                        |               |
|------------------------|---------------|
| (i) कागज               | ताड़पत्र      |
| (ii) पहले का लेखन      | विकसित मुद्रण |
| (iii) जोहानस गुटेनबर्ग | पैपाइरस       |
| (iv) मुद्रित माध्यम    | इंडिया टुडे   |
| (v) साप्ताहिक          | समाचारपत्र    |



टिप्पणी



टिप्पणी

## 2.6 जन माध्यम के विभिन्न प्रकार

### समाचार तथा पत्रकारिता

आपने पहले ही पढ़ा है कि कागज तथा मुद्रण के आविष्कार के कारण समाचारपत्रों का विकास हुआ। समाचारपत्रों का मुद्रण तथा प्रकाशन जनरुचि की सूचनाएँ उपलब्ध कराने के लिए, विज्ञापन तथा विचार प्रस्तुत करने के लिए होता है। यह प्रकाशन सामान्यतः दैनिक, साप्ताहिक या अन्य नियमित समय अंतराल पर जारी होते हैं। समाचारपत्र सर्वप्रथम 17वीं सदी में जर्मनी, इटली और नीदरलैंड्स जैसे देशों में प्रकाशित हुए। कालान्तर में इनका प्रसार दुनिया के सभी देशों तक हो गया। समाचारपत्रों के स्वामी पहले वे लोग होते थे जो किसी सामाजिक समस्या के लिए संघर्ष करने हेतु पत्रकारिता को साधन बनाते थे। अब आप जानना चाहेंगे कि 'पत्रकारिता' क्या है? पत्रकारिता में सूचनाओं का संकलन और इसका संप्रेषण आदि कार्य सम्मिलित है। इसमें सूचनाओं का चयन, तथा घटनाओं, विचारों, सूचनाओं तथा विवादों का उचित संदर्भ में सम्पादन, मुद्रण करना, प्रस्तुतीकरण भी शामिल है। अपने अगले मॉड्यूल में आप इस विषय पर अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

भारत में पत्रकारिता का प्रारम्भ ब्रिटिश शासनकाल के दौरान अंग्रेजों द्वारा किया गया और बाद में राजा राममोहन राय, बाल गंगाधर तिलक और फिर महात्मा गाँधी जैसे राष्ट्रीय नेता तथा समाज सुधारकों ने इसे शुरू किया। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अंग्रेजों से संघर्ष में पत्रकारिता का उपयोग किया। गाँधीजी ने 1903 में दक्षिण अफ्रीका में वहाँ रहने वाले भारतीयों के अधिकार हेतु संघर्ष के लिए 'इंडियन ओपिनियन' पत्र प्रारम्भ किया। तत्पश्चात उन्होंने भारत में 'हरिजन' प्रारम्भ किया तथा 'यंग इंडिया' के लिये लिखा। आज भारत में विभिन्न भाषाओं में बड़ी संख्या में प्रकाशित होने वाले समाचारपत्र हर सुबह लाखों लोगों तक पहुँचते हैं।

"प्रिंट मीडिया" मॉड्यूल में आप समाचारपत्रों के बारे में और अधिक जान सकेंगे।

### बेतार संचार

जब हमने जनसंचार के उद्भव के बारे में चर्चा की थी तो दो आविष्कारों का जिक्र आया था। पहला 1835 में कूट का प्रयोग करने के सैम्युअल मोर्स द्वारा संदेश भेजने के प्रयास के विषय में था। बाद में 1851 में अंतर्राष्ट्रीय मोर्स कोड विकसित किया गया। अभी हाल के समय तक हम महाद्वीपों के पार संदेश भेजने के लिए मोर्स के विद्युत टेलीग्राफ का प्रयोग करते थे। समय बीतने के साथ संदेशों का बिना किसी तार या केबल के भेजना संभव हो सका। आज जिस सेलफोन का प्रयोग हम करते हैं वह बेतार संचार का एक उत्तम उदाहरण है।

### छायांकन

आप तुम कैमरा और फोटोग्राफी (छायांकन) से परिचित होंगे। छायांकन में प्रकाश का



उपयोग करके छवि निर्मित की जाती हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रांस के दो व्यक्तियों नाइसफोर नीप्से तथा लुई जैक मांड डैगे ने फोटोग्राफी का विकास किया। कुछ वर्ष पहले तक हम श्वेत-श्याम छायांकन ही करते थे। बाद में एक तैलयुक्त सफेद तरल (इमल्सन) के प्रयोग से रंगीन छायांकन संभव हुआ। समाचारपत्र, पत्रिकाओं तथा विज्ञापन में छायांकन का प्रयोग होता था। बीसवीं शताब्दी के अंत तक छायाकारों ने डिजिटल तकनीकी का प्रयोग शुरू किया जिससे छायांकन आसान बन गया तथा कैमरे का प्रयोग और भी आसान हुआ। आज के सेलफोन में भी कैमरा लगा होता है।

## फिल्म

पहले के भाग में हमने छायांकन पर चर्चा की। एक कैमरे के प्रयोग से लिये गये चित्र या छाया को 'स्टिल फोटोग्राफ' कहते हैं क्योंकि वह स्थायी होते हैं चलते नहीं। 'स्टिल फोटोग्राफ' के बाद के विकास को हम 'चलचित्र' (मोशन पिक्चर्स) या मूवीज़ कहते हैं। इस तकनीकी में स्टिल फोटोग्राफ की फिल्म पर बनी एक शृंखला को तीव्र गति से एक-एक के बाद एक पर्दे पर प्रक्षेपित किया जाता है। इसमें इस्तेमाल होने वाले कैमरे को मूवी कैमरा कहते हैं। मोशन पिक्चर मशीन (चलचित्र यंत्र) के प्रयोग से इन फिल्मों का प्रक्षेपण चलचित्र के रूप में किया जाता था और कालान्तर में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में टामस एल्वा एडिसन ने तथा फ्रांस में लुमिये बंधुओं ने बोलने वाले चित्रों का विकास किया। लुमिए बंधु भारत भी आए तथा उन्होंने मुम्बई में अपना चलचित्र दिखाया। ठीक अमरीका के हॉलीवुड जैसे, भारत ने भी चलचित्र की कला तथा तकनीकी का विकास किया। पहले चलचित्र मूक थे फिर 1927 में बोलने वाले चलचित्र आ गये। भारत का पहला 'मोशन पिक्चर' (चलचित्र) दादा साहब फाल्के का 'राजा हरिश्चन्द्र' तथा भारत का पहली टॉकी (बोलने वाला चलचित्र) 'आलम आरा' था। आज फिल्में हमारे जीवन का अविभाज्य अंग हैं। फिल्मों से सितारों की परम्परा की शुरुआत हुई। आपका पसंदीदा फिल्मी सितारा कौन है? भारत में पहले की फिल्में पौराणिक कथाओं पर आधारित होती थीं और कालान्तर में फिल्मों में सामाजिक मुद्दे भी लिये जाने लगे जैसे आज तक हो रहा है।

## क्रियाकलाप 2.2



ऐसी दो भारतीय फिल्मों का नाम लिखें जो सामाजिक मुद्दों पर आधारित हों।

## रेडियो

मात्र जिज्ञासावश तथा तकनीकी प्रयोगों के चलते रेडियो जनसंचार का वास्तव में सशक्त तथा लोकप्रिय माध्यम बन गया। पश्चिम में इसके विकास के बाद 1920 के दशक में हमारे पास भी रेडियो आ गया तथा मुम्बई में पहला औपचारिक रेडियो स्टेशन स्थापित हुआ। 'रेडियो' मॉड्यूल में आप रेडियो के विषय में विस्तार से जान सकेंगे।



टिप्पणी



टिप्पणी

## टेलीविजन

बेयर्ड द्वारा 1920 में खोजा गया टेलीविजन 20वीं शताब्दी के तकनीकी आश्चर्यों में से एक है। भारत में प्रायोगिक तौर पर टेलीविजन का प्रारम्भ 1959 में हुआ और पहला टेलीविजन स्टेशन दिल्ली में स्थापित किया गया। प्रारम्भ में यह बेहद सीमित तथा मन्द था लेकिन 1982 में रंगीन टेलीविजन प्रसारण प्रारम्भ होने के साथ यह लोकप्रिय बन गया। आज दूरदर्शन के पास दुनिया का एक विशालतम टेलीविजन नेटवर्क है। 1990 के दशक के शुरुआती वर्ष से भारत में उपग्रह टेलीविजन भी आ गया तथा बाद में डायरेक्ट टू होम (डी.टी.एच.) का आगमन भी हुआ। बाद के मॉड्यूल में आप टेलीविजन के विषय में और अधिक जान सकेंगे।

## न्यू मीडिया

कम्प्यूटर तथा सूचना तकनीकी के विकास तथा निरन्तर प्रयोग के परिणामस्वरूप 'न्यू मीडिया' का उद्भव हुआ। इसमें कम्प्यूटर, सूचना तकनीकी, संचार नेटवर्क तथा डिजिटल मीडिया सम्मिलित है। इसके कारण जनसंचार में एक नयी प्रक्रिया जुड़ी जिसे हम 'कन्वरजेंस' कहते हैं। 'कन्वरजेंस' का अर्थ है मीडिया के विभिन्न प्रकारों तथा अन्य प्रारूपों जैसे मुद्रित टेक्स्ट, फोटोग्राफ, फिल्म, रिकार्डेड संगीत या रेडियो, टेलीविजन इत्यादि का एक साथ आ जाना। यद्यपि पुराने मीडिया से नये मीडिया को अलग करके समझना मुश्किल है तथापि वर्ल्ड वाइड वेब या इंटरनेट ने हमारे संचार के तरीके ही बदल दिये हैं। इसके विषय में बाद के अध्याय में आप अधिक जान सकेंगे।

## परम्परागत माध्यम

परम्परागत माध्यम हमारे देश की समृद्ध विरासत का एक अंग हैं। इसका आधार हमारे देश की सशक्त मौखिक परम्परा है। यह हमारे अपने देश का ही है तथा इसकी जड़ें मजबूती से हमारी अपनी संस्कृति से जुड़ी हैं। इसमें उतनी ही विविधता है जितनी हमारी संस्कृति में।

भारत में जनजीवन कृषि तथा धर्म से गहराई से प्रभावित है। हमारी ऋतुओं का भी प्रभाव इस पर है। प्राचीनकाल से हम मेले आयोजित करते आ रहे हैं तथा त्यौहार मनाते आ रहे हैं जिसमें संगीत तथा नृत्य सम्मिलित रहते हैं। यही गीत तथा नृत्य मीडिया के परम्परागत रूप हैं जो सूचित, शिक्षित करने के साथ लोगों का मनोरंजन भी करते हैं।

मीडिया के तीव्र रूपों के आगमन से परम्परागत माध्यम प्रभावित हुआ। रेडियो या



टिप्पणी

टेलीविजन से भिन्न परम्परागत माध्यम में कलाकार या संप्रेषक तथा श्रोता एक-दूसरे को जानते हैं। इसका प्रदर्शन एक स्वाभाविक, ज्ञात तथा दोस्ताना माहौल में होता है। इसके संदेश भी सहज होते हैं, विषयवस्तु ज्ञात होती है तथा भाषा व मुहावरे जाने पहचाने होते हैं। अन्य आधुनिक माध्यमों से भिन्न, लोग इससे कभी ऊबते भी नहीं। आओ हम पूरे उत्तर भारत में मनाई तथा प्रदर्शित की जाने वाली रामलीला का उदाहरण लें। 'रामायण' की कथा से सभी परिचित हैं जिस प्रकार कलाकारों से। हर साल वे एक ही कथा को दोहराते हैं, फिर भी लोग बड़ी संख्या में इसे देखने आते हैं। परंतु क्या आप एक साधारण हिन्दी फिल्म कई बार देख सकते हैं?

हमारे देश में परम्परागत माध्यमों के अनेक प्रकार हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में इन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है। परम्परागत माध्यमों के कुछ सामान्य उदाहरण हैं कथावाचन, लोक संगीत, नुक्कड़ नाटक तथा कठपुतली।

परम्परागत माध्यमों के कुछ रूपों जैसे परम्परागत गीत तथा पौराणिक कथाओं को लिपिबद्ध किया गया है। लेकिन लोक माध्यमों के विभिन्न प्रकार सहज होते हैं या उसी स्थान पर सृजित किए जाते हैं जहाँ इनका प्रदर्शन होता है।



### पाठगत प्रश्न 2.3

1. भारत में पाये जाने वाले परम्परागत माध्यमों के किन्हीं तीन रूपों की सूची बताइए।
2. 'कन्वरजेंस' शब्द का क्या अर्थ है?



### 2.7 आपने क्या सीखा

#### जनसंचार

- जनसंचार की परिभाषा
- जनसंचार के कार्य
- सूचना
  - शिक्षा
  - मनोरंजन



टिप्पणी

- जनसंचार का उद्भव
  - कागज और मुद्रण का आविष्कार
  - टेलीग्राफ, रेडियो तथा टेलीविजन का आविष्कार
- जनसंचार के विभिन्न प्रकार
  - बेतार संचार
  - फोटोग्राफी (छायांकन)
  - समाचारपत्र
  - रेडियो
  - टेलीविजन
  - फिल्म
  - न्यू मीडिया
  - परम्परागत माध्यम

## 2.8 पाठान्त प्रश्न

1. उदाहरण के साथ 'जनसंचार' की परिभाषा दीजिए।
2. जनसंचार के कार्य तथा उद्भव का वर्णन करें।
3. संक्षेप में जनमाध्यम के विभिन्न रूपों की व्याख्या करें।



## 2.9 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

- 2.1 1. (i) समाचारपत्र (ii) फिल्म (iii) रेडियो (iv) टेलीविजन  
(v) इंटरनेट (vi) अन्य
2. भाग 2.2 देखें
- 2.2 1. (i) पैपाइरस (ii) ताड़पत्र (iii) मुद्रण (iv) समाचारपत्र  
(v) इंडिया टुडे
- 2.3 1. भाग 2.6 देखें
2. भाग 2.6 देखें